मैं भविष्य में कैसे पहुँचूँ?

...मैं यह जानना चाहता हूँ कि क्या करूँ।

मिस्टर रोबिन्सन के व्यापार में भारी घाटा हुआ; अनेक वर्षों में पहली बार ही उन्होंने इतने सारे रुपयों का नुकसान सहा था। समस्या तो यह थी कि उन्हें यह नहीं मालूम पड़ रहा था कि ऐसा क्यों हो रहा था। उनकी कम्पनी खरीदने के लिए उन्हें एक प्रस्ताव मिला। क्या वह तुरन्त नकद पैसा पाने के लिए बेच दें अथवा भविष्य में लाभ पाने की आशा से रोके रहें? यदि वह भविष्य को जान सकता होता!

मिस्टर रोबिन्सन ने भी वही किया जो दूसरों ने किया था। वह एक भविष्य-बताने वाले के पास गया। यदि वह भविष्य को जान सकता तो वह वैसा ही करेगा। भविष्य बताने वाले ने दावा करते हुए कहा कि मैं "देखता" हूँ कि एक बेईमान कर्मचारी, जो उसके निकट का व्यक्ति है जिस पर उसे भरोसा है, शीघ्र ही वह उसके व्यापार का मालिक बनने का प्रयत्न करेगा। वास्तव में, भविष्य बताने वाले ने यह कहा था कि यही व्यक्ति अस्थाई रूप से उसके व्यापार में हानि का कारण था।

मिस्टर रोबिन्सन ने ठीक वही किया जो भविष्य बताने वाले ने कहा था। वह मिस्टर केज़ी पर बुरी तरह बिगड़ उठे, जो उनका व्यापार में निकट का सहयोगी था। उसने मिस्टर केज़ी पर अनेक

वर्षों से भरोसा किया था, परन्तु अब उसने सोचा कि भविष्य बताने वाला ग़लत हो ही नहीं सकता।

उसी रात, मिस्टर रोबिन्सन अपने चर्च में गए। वहाँ पवित्र आत्मा ने उन्हें कायल किया। उसने भविष्य बताने वाले के पास जाने हेतु पश्चात्ताप किया तब मिस्टर केज़ी को बुलाया कि उससे अपने बुरे व्यवहार के लिए क्षमा माँगे। पर यह क्या, उसका दिल दहल गया क्योंकि मिस्टर केज़ी ने आत्म हत्या कर ली थी! बाद में, यह भी सिद्ध हो गया कि मिस्टर केज़ी एक ईमानदार व्यक्ति था और कंपनी के घाटे में उसका कुछ भी हाथ न था।

मनुष्य में क्या बात है जो हमेशा उसे अपना भविष्य जानने को प्रेरित करती है? क्या यह ग़लत है? इस पाठ में आप यह खोज कर पाएँगे कि परमेश्वर किस प्रकार चाहता है कि आप जानें कि उसने भविष्य के लिए क्या प्रकट किया है।

इस पाठ में आप सीखेंगे...

- भविष्य के लिए परमेश्वर की योजना।
- परमेश्वर क्यों अपने प्रकाशन को सीमित रखता है।
- आज वर्तमान के लिए परमेश्वर की योजना।

यह पाठ आपकी सहायता करेगा...

- सही मनोवृत्ति से भविष्य पर दृष्टिपात करना।
- यह समझाना कि परमेश्वर क्यों भविष्य की कुछ बातें तो दिखाता है और बाकि नहीं।
- अपने जीवन के लिए परमेश्वर की प्रतिदिन की योजना पर चलना।

भविष्य के लिए परमेश्वर की योजना

विषयवस्तु 1. भविष्य के प्रति परमेश्वर के प्रकाशन के अभिप्राय और उसकी सन्तुष्टि को बताना।

यह समझना अति आवश्यक है कि मनुष्य प्राणी ही ऐसी सृष्टि है जो यह संकेत देता है कि वह भविष्य के बारे में सोच सकता है। जानवर सहज बोध से अपने भविष्य के लिए भोजन एकत्रित किया करते हैं, परन्तु मनुष्य भविष्य के बारे में सोचता है और उसे अपने अभिप्रायों के लिए वश में करने का प्रयत्न भी करता है। मनुष्य ने स्वतः भविष्य के विषय में सोचने हेतु अपनी योग्यता को विकसित नहीं किया, यह योग्यता तो उसे परमेश्वर की ओर से दी गई है। यह उसके स्वभाव का एक हिस्सा है क्योंकि उसकी सृष्टि परमेश्वर के स्वरूप में की गई।

भविष्य को जानने का ख़तरा मनुष्य की इच्छा में निहित नहीं है। ख़तरा तो उस सच्चाई में निहित है कि कभी-कभी भविष्य के प्रति मनुष्य का ज्ञान उसे बुद्धिमानी-पूर्ण कार्य कराने के स्थान पर नासमझी के काम कराता है।

भविष्य के बारे में जानने के लिए प्रार्थना करना तथा परमेश्वर की इच्छा जानने के लिए प्रार्थना करने में अन्तर है। सामान्यतः हम भविष्य के बारे में जानना चाहते हैं ताकि हम निर्णय ले सकें कि क्या करना है। परन्तु जब हम परमेश्वर की

इच्छा को जानना चाहते हैं तो यह इसलिए कि जो वह हमसे चाहता है वह कर सकें।

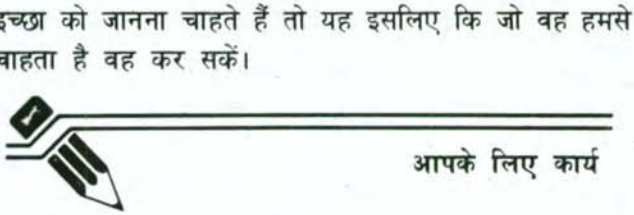

आपके लिए कार्य

1 निम्न में से कौन सा कथन भविष्य की सही मनोवृत्ति को दर्शाता है?

(अ) **मैं भविष्य के बारे में जानना चाहता हूँ इसलिए क्या कार्यवाही करना है इस बारे में मैं निर्णय ले सकता हूँ।**

(ब) मैं परमेश्वर की योजना को जानना चाहता हूँ ताकि जो वह मुझ से चाहता है वह कर सकूँ।

परमेश्वर ने क्या प्रकाशित (प्रकट) किया

परमेश्वर ने हम पर भविष्य की कुछ बातें प्रकट करना चुना। भविष्य में होने वाली बातों, बाइबल की अन्तिम पुस्तक, यूहन्ना को दिए गए प्रकाशन में इस रूप में प्रकट होती हैं जैसे दृश्यपटल पर आने वाले दृश्यों की श्रृंखला हो।

कई बार तो यूहन्ना विस्तार से देखे गए दृश्यों का वर्णन करता है। फिर भी, जो कुछ उसने लिखा, उसकी व्याख्या करते समय बाइबल के विद्वान भविष्य में होने वाली बातों के प्रति एक मत नहीं हैं। हो सकता है कि जब परमेश्वर भविष्य को दिखाता है तो वर्तमान समय के कारण उसे ग्रहण करना मुश्किल होता है।

हम कैसे कल्पना कर सकते हैं कि यीशु मसीह का स्वमेव इस पृथ्वी पर द्वितीय आगमन वास्तविक होगा अथवा वह एक हज़ार वर्ष तक धार्मिकता से राज्य करेगा (प्रकाशित वाक्य 1:7, 20:1-6)? इसमें आश्चर्य नहीं कि यूहन्ना द्वारा किए गए अनेक वर्णन अवास्तविक लग सकते हैं। क्योंकि हम इन घटनाओं को देखने हेतु

सक्षम नहीं हैं इसलिए उसके सन्देश के अर्थ को ठीक-ठीक समझ पाना हमारे लिए कठिन होता है।

यूहन्ना के सन्देश की स्पष्ट बातें हैं: जब परमेश्वर का समय (दिन) आएगा तो संसार बदल जाएगा। मनुष्य-निर्मित सभ्यता नष्ट हो जाएगी परन्तु मनुष्य जीवित बचा रहेगा। मसीह हस्तक्षेप करेगा और अपने राज्य की स्थापना करेगा।

दुष्ट का न्याय होगा और यदि कुछ भी बुराई शेष रहेगी तो उसे पृथ्वी पर से दूर कर दिया जाएगा। बुराई का सृष्टा शैतान दण्डित किया जाएगा और सदाकाल के लिए निकाल दिया जाएगा।

हम बदल जाएंगे!.हमें महिमामय देह दी जाएगी, हमारा ज्ञान सिद्ध ज्ञान होगा। उद्धार का कार्य पूरा हो जाएगा। आप व्यक्तिगत रूप में सिद्ध होंगे। आप परमेश्वर की सिद्ध इच्छा के अन्तर्गत भी पाए जाएंगे। स्वामी के रूप में मसीह जो हमारा बनाने वाला सृजक है वह आप में अपना कार्य पूरा कर चुकेगा; उसका राज्य पूर्ण होगा।

यह समझना सरल है कि क्यों परमेश्वर ने हमें पहले ही से अधिक या सब कुछ नहीं बताया। हमारे लिए यह कल्पना करना कठिन होता है कि उसने हम से क्या कहा था।

आपके लिए कार्य

2 प्रत्येक सत्य कथन के अक्षर पर गोला बनाएँ।

(अ) भविष्य के बारे में यूहन्ना द्वारा किया गया वर्णन अपरिचित है क्योंकि यह अवास्तविक है।

(ब) प्रकाशित वाक्य की पुस्तक बताती है कि यीशु मसीह स्वमेव व्यक्तिगत रूप में पृथ्वी पर लौटेगा।

(स) चूँकि हम भविष्य के विषय में ज्ञान का ग़लत प्रयोग कर सकते हैं, इसलिए परमेश्वर ने यही चुना कि हमें न बताए।

(द हमारे लिए परमेश्वर की योजना में सम्पूर्ण सिद्धता सम्मिलित है।

प्रकाशन के लिए परमेश्वर का अभिप्राय

भविष्य के बारे में थोड़ा ही जानने पर भी हम परमेश्वर की "सहायता" कर सकते हैं। इस सम्बन्ध में बाइबल के उदाहरण उत्पत्ति 16 अध्याय में पढ़ें—अब्राम और हाज़िरा की कहानी।

यीशु ने अपने लिए परमेश्वर की योजना के असीम-अधारभूत आनन्द को देखा था। यह आनन्द जो उसके आगे रखा था उसी ने उसे क्रूस और उसकी निन्दा को सहने योग्य बनाया था (इब्रानियों 12:2)। शैतान की योजना थी कि मसीह के अधिकार में जो भविष्य का ज्ञान था (संसार के सब राज्य मसीह के हो जाएँगे) उसका प्रयोग करके वह मसीह को यह निश्चय दिलाए कि इन राज्यों को प्राप्त करने का एक सरल तरीका है। वह मसीह से केवल यह चाहता था कि वह झुककर उसको दण्डवत करे (लूका 4:5-8)। परन्तु मसीह ने शैतान के प्रस्ताव को ठुकरा दिया और अपने लिए निर्धारित किए गए परमेश्वर के मार्ग पर चला।

परमेश्वर ने हमें भविष्य के विषय में दिखाया जिससे कि वर्तमान में कठिनाइयों का सामना करने के लिए सहायता मिले। उसने हमारे लिए जो लक्ष्य निर्धारित किया है उसे पाने में जो सबसे असंभव बात है—सिद्ध बनना—इस कारण हमें चाहिए कि प्रतिदिन सहायता पाने हेतु उसकी ओर देखें। इसके लिए वह हमें अपनी सामर्थ से भरता है और आज्ञापालन के लिए अनुग्रह भी प्रदान करता है।

आपके लिए कार्य

3 निम्न वाक्य को पूरा करें। परमेश्वर हमें भविष्य के बारे में दिखाता है ताकि हम ....

....

परमेश्वर क्यों अपने प्रकाशन को सीमित करता है

विषयवस्तु 2. परमेश्वर क्यों भविष्य के निमित्त अपने प्रकाशन को सीमित करता है इसकी व्याख्याओं को चुनना।

परमेश्वर हमें प्रत्येक बातें एक ही बार में क्यों नहीं दिखा देता? क्या वह हम पर भरोसा नहीं कर सकता? प्रश्न यह नहीं है कि उसका हम पर कितना भरोसा है परन्तु प्रश्न यह है कि हमारा भरोसा उस पर कितना है।

यदि हमने भविष्य के लक्ष्य तक पहुँचने के लिए उन सब आवश्यक क़दमों पर ध्यान दिया है, तो हम कुछ को स्वीकार कर लेंगे और दूसरी बातों को नज़रअन्दाज़ कर देंगे। इस प्रकार पीछे हटने के द्वारा हो सकता है कि हम परमेश्वर की योजना के योग्य न ठहरें। **ज़ल्दबाज़ी** करने और कुछ आवश्यक माँगों का तिरस्कार करने के नमूने को हम कुछ मनुष्यों के जीवन से देखें जिनका वर्णन बाइबल में मिलता है।

यहोशू ने यरीहो पर विजय पा ली थी। अब केवल 'ऐ' नगर को जीतना शेष रह गया था। वह शीघ्र ही इस काम को भी समाप्त कर लेना चाहता था अतः उसने प्रभु परमेश्वर की अगुवाई पाए बिना ऐ पर आक्रमण कर दिया। परिणाम दुःखद व भयंकर हुआ (यहोशू 7:2-5)।

दाऊद राजा ने वाचा के सन्दूक (पवित्र सन्दूक जिसमें इस्राएल से की गई परमेश्वर की वाचा की प्रति रखी थी) को शीघ्र ही यरूशलेम को ले जाने का प्रयत्न किया। उसका लक्ष्य तो ठीक था। उसने कार्यकुशलता भी दिखाई परन्तु सन्दूक को जिस निश्चित तरीके से उठाकर ले जाया जाना था उसके स्थान पर उसने उस सन्दूक को बैलगाड़ी पर रखवा दिया (निर्गमन 25:12-14; यहोशू 3:2-4)। पुनः परिणाम, परमेश्वर के राज्य की उन्नति का कारण नहीं बना पर विनाश का कारण बना (2 शमूएल 6:6-8)।

जब पतरस को मालूम हुआ कि यीशु मध्यस्थ के रूप में क्रूस पर स्वयं बलिदान बनने जा रहा है तो वह यह ग्रहण नहीं कर सका था (मत्ती 16:22)। वह मसीह के उस अनुभव में मसीह के साथ चलने के बजाय तलवार से लड़ना चाहता था (यूहन्ना 18:10-11)।

ऐसा कहने का क्या अर्थ होता है," मैं अपने लिए परमेश्वर की इच्छा जानना चाहता हूँ"–इसका अर्थ यह है : "मैं परमेश्वर की योजना जानना चाहता हूँ ताकि यह निर्णय कर सकूँ कि मुझे क्या करना है।" परमेश्वर ने जो कुछ प्रकट किया है हमें उसकी सीमाओं को स्वीकार करना चाहिए तथा इस बात का निश्चय होना चाहिए कि परमेश्वर की इच्छा को जानने के निमित्त हमारे अभिप्राय सही हैं।

आपके लिए कार्य

4 परमेश्वर ने भविष्य के प्रति अपने प्रकाशन को क्यों सीमित किया इसका सबसे महत्त्वपूर्ण कारण यह है, क्योंकि–

(अ) भविष्य के प्रति हमारा ज्ञान इसे बदल नहीं सकेगा।

(ब) हम अक्सर ज़ल्दबाजी करने का प्रयत्न करते हैं अथवा बीच में उठाए जाने वाले क़दमों का तिरस्कार कर देते हैं।

(स) कभी-कभी हमारे लिए यह समझना कठिन होता है कि भविष्य में क्या होगा।

5 2 पतरस 3:10-11 पढ़िए। अपनी नोटबुक में यह लिखिए कि यह पद हमें क्यों बताता है कि उस ज्ञान के प्रति कि आकाश और पृथ्वी नाश किए जाएँगे हमें क्या करना चाहिए?

आज के लिए परमेश्वर की रूपरेखा (योजना)

विषयवस्तु 3. उन बातों और तरीकों का वर्णन करना जिनमें आप प्रत्येक दिन परमेश्वर की योजना के अनुसार चल सकते हैं।

आज आपके जीवन के लिए परमेश्वर की क्या इच्छा है? वह क्या चाहता है कि आप करें?

आत्मिक अनुभव कई तरह के होते हैं। मसीह में विशेष प्रकार के अनुभव केवल एक ही बार के अनुभव के प्रतीक हैं। इनमें से एक नया जन्म का अनुभव है, क्योंकि परमेश्वर अनन्तकाल का उद्धार देता है।

दूसरे प्रकार के अनुभव कभी-कभी होने वाले अनुभव प्रतीत होते हैं। जैसे कि सृष्टि की रचना एक-एक दिन के अनुसार हुई, वैसे ही ये मौसमी अनुभव हमारे आत्मिक जीवनों के लिए विशेष अवसर के लिए होते हैं। आत्मिक नवजागरण का एक विशेष समय—इनमें से एक अनुभव है। हम आत्मिक जागृति के चिरस्थायी होने वाले अनुभव में बने नहीं रहते। हम "वर्षा" की अपेक्षा करते हैं—आत्मिक नवजागरण—वर्षा के दिनों में वर्षा। परमेश्वर इन मौसमों के स्वरूप को अपने आत्मा और वचन की सेवा से स्वच्छ बनाता है।

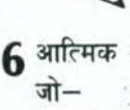

आपके लिए कार्य

6 आत्मिक अनुभव जो कि मौसमी है वह एक ऐसा अनुभव है जो—

(अ) नियत समयों पर होता है।

(ब) केवल एक बार होता है।

(स) लगातार हुआ करता है।

परन्तु केवल एक बार होने वाले तथा मौसमी अनुभवों के साथ ऐसे भी अनुभव हैं जो दिन प्रतिदिन के आधार पर होते हैं। परमेश्वर ने हमें एक ऐसे संसार में रखा है जिसमें उसने प्रतिदिन का चक्र निर्धारित किया है। क्योंकि हम दिन प्रतिदिन जीते हैं,

इसलिए उसने कुछ विशेष आत्मिक सिद्धान्त व नियम नियत किए हैं जिन्हें हमें दिन प्रतिदिन मानना है।

आइए देखें, प्रत्येक दिन के करने के लिए परमेश्वर हमसे क्या चाहता है तब देखें कि वह कौन सी प्रतिज्ञाएँ करता है।

पुराने नियम काल में जब मन्दिर (पवित्र स्थान) अथवा तम्बू प्रभु-परमेश्वर की उपस्थिति का स्थान था तब यही आराधना का केन्द्र हुआ करता था। इस पवित्रस्थान में याजक व लेवीय कहलाने वाले विशेष पुरुषों को सेवा-टहल हेतु निश्चित कार्य सौंपे जाते थे। इन कार्यों को प्रतिदिन पूरा करना होता था। प्रतिदिन के कर्तव्यों के प्रति आज्ञाकारी होने की प्रक्रिया अति आवश्यक थी, नहीं तो महान वार्षिक पर्वों को मनाना निरर्थक हो जाता।

यह तब की बात है जब जकर्याह पवित्र-स्थान (मन्दिर) में प्रतिदिन याजक पद के अपने कर्तव्यों को पूरा किया करता था तब

जिब्राएल स्वर्गदूत ने उससे कहा कि उसके एक पुत्र होगा जो परमेश्वर की प्रजा को आने वाले प्रभु के लिए तैयार करेगा (लूका 1:8-17)। यह उन दिनों की बात है, जबकि बूढ़ी हन्नाह जो एक नबिया थी मन्दिर में प्रतिदिन आकर प्रार्थना किया करती थी और उसे महान् सौभाग्य प्राप्त हुआ। उसने बालक यीशु के अर्पण को स्वयं अपनी आँखों से देखा और जगत के उद्धारकर्त्ता के दर्शन पाकर धन्यावाद करते हुए कृतार्थ हुई! (लूका 2:36-38)।

हमें प्रतिदिन क्या करना है?

पिन्तेकुस्त के दिन के बाद कलीसिया ने महान सफलता का अनुभव किया (प्रेरितों के काम 2:40-41)। विश्वासियों का व्यवहार उनके प्रतिदिन के कार्यों से आंका गया, इसके द्वारा उन पर परमेश्वर की आशीष बनी रही। प्रतिदिन की उनकी आत्मिक आराधना ठीक उसी प्रकार की थी जैसे पुराने नियम काल में याजकगण औपचारिक आराधना किया करते थे। उनका नमूना क्या था? इस की जाँच प्रेरितों के काम 2:44-47 से करें।

पहिली बात तो यह थी कि वे प्रतिदिन अपने भाइयों से अपने सम्बन्ध ठीक रखते थे। वे एक निकट की संगति में बने रहे (पद 44, 46)।

परमेश्वर के किसी जन से सही सम्बन्ध न रखने के अतिरिक्त अन्य कुछ भी कारण परमेश्वर की वाणी सुनने में बाधक नहीं बनता। आपके अन्दर पाई जाने वाली कड़वाहट, बदला लेने की भावना, ईर्ष्या अथवा अन्य बुरी भावनाएँ निश्चय ही परमेश्वर से बातचीत करने की आपकी योग्यता को कम कर देती हैं। प्रतिदिन अपने सम्बन्धों को जाँच लेना उत्तम होता है। बाइबल बताती है कि यदि सम्बन्ध बिगड़ गए हैं, तो उसी दिन सूरज ढलने से पहले अपने सम्बन्ध ठीक कर लें (इफिसियों 4:26)।

आपके लिए कार्य

7 अपनी नोटबुक में उन व्यक्तियों की सूची बनाएँ जो प्रतिदिन के जीवन में आपके लिए महत्त्वपूर्ण हैं। क्या इनमें से प्रत्येक के साथ आपके सम्बन्ध ठीक हैं? प्रतिदिन इनको जांचने की आदत बना लें और सही सम्बन्ध बनाए रखने के लिए जो आवश्यक है वह करें।

प्रेरितों के काम 2:46 में वर्णित एकता के अतिरिक्त उनमें उत्साह और साहस भरपूरी से था। इब्रानियों 3:13 हमें सीधा निर्देश देता है कि हम एक दूसरे की सहायता और उत्साहित करें।

एक दूसरे से सही सम्बन्धों के कारण ही हम प्रचार, सेवा और एक दूसरे की सहायता कार्य में संलग्न हो सकते हैं। रोमियों 12:1-2 के अनुसार नये हुए मन से आपको यह सब करने के अनेक अवसर प्राप्त होंगे।

दूसरी बात, उन्होंने प्रतिदिन परमेश्वर की स्तुति की (पद 46-47)। परमेश्वर के सन्तानों के लिए स्तुति करना प्रतिदिन का कार्य होना चाहिए। यह आज्ञापालन के बलिदान स्वरूप आरंभ किया जा सकता है, परन्तु परमेश्वर की भलाई के आनन्द के रूप में इसका अन्त होना चाहिए।

तीसरी बात, वे प्रतिदिन अपने समर्पण को नया बनाया करते थे। प्रेरितों के काम 2 में जो नमूना दिया गया वह दर्शाता है कि विश्वासीगण किस प्रकार अपने समर्पण को कार्यरूप देकर प्रकट किया करते थे। मसीह ने कहा कि जो कोई उसके पीछे चलना चाहता है उसे "प्रतिदिन अपना क्रूस उठाना होगा" (लूका 9:23)। इसके द्वारा मसीह कह रहा था कि प्रतिदिन हमें अपने आपको यह

स्मरण दिलाने की आवश्यकता है कि हम परमेश्वर के हैं। इस प्रकार के व्यवहार अथवा मन के बन जाने से सब कुछ परमेश्वर की महिमा के लिए किया जाएगा।

दाऊद ने यह सीखा था कि समर्पण में परमेश्वर के लिए वे बातें भेंट स्वरूप चढ़ाना सम्मिलित हैं जो उसने करने के लिए शपथ खाई है (भजन संहिता 61:8)

चौथी बात, वे प्रतिदिन की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए परमेश्वर पर निर्भर रहते थे। यही हमारा भी नमूना होना चाहिए। हमसे यह प्रार्थना करने को कहा, "आज की रोटी जो हमें आवश्यक है वह दे" (मत्ती 6:11)

आपके लिए कार्य

8 उस अक्षर पर गोला बनाएँ जिसमें किसी कार्य का वर्णन है जो प्रतिदिन के लिए आज्ञापालन का एक चक्र है।

(अ) एक लम्बे समय के लिए उपवास करना।
(ब) परमेश्वर की स्तुति और धन्यवाद करना।
(स) अपने आपको परमेश्वर को समर्पित करना।
(द) दूसरे से अपने सम्बन्ध ठीक रखना।
(य) नया जन्म का अनुभव पाना।

(र) प्रतिदिन की आवश्यकताओं के लिए परमेश्वर पर भरोसा रखना।

उपरोक्त बातों को करने से परमेश्वर की इच्छा पर चलना हमारे लिए कठिन नहीं होता।

उसने क्या प्रतिज्ञा की है? उसने कहा है कि वह अपने अनुग्रह से मिलने वाले लाभ को प्रतिदिन नया बनाएगा और हमारी सहायता करेगा (भजन संहिता 68:19)। हम आज के लिए उसके प्रावधानों का भरपूरी से प्रयोग करने के द्वारा दूसरे दिन (कल) मिलने वाले प्रावधानों को समाप्त नहीं करते हैं। उसका भण्डार अगम और अतुल है।

यही परमेश्वर का चक्र है...परमेश्वर ने इसे स्थापित किया है। प्रथम मानव आदम के लिए भी यही ठहराया गया था। इस्राएल जाति की आराधना सभाओं (उपासना पर्वों) में यही चक्र था। यह नये नियम की कलीसिया में भी था। और इस प्रतिदिन के चक्र में परमेश्वर हमारी अगुवाई करता है।

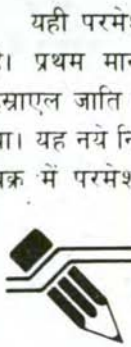

आपके लिए कार्य

9 हो सकता है कि आपने महसूस किया हो कि इस पाठ में बताए गए चार कारणों में से एक या अधिक के द्वारा आपको भी परमेश्वर की आज्ञा मानना आरंभ करने की आवश्यकता है। अपनी नोटबुक में नीचे दिए गए वाक्यों को पूरा करें जिनमें प्रतिदिन के आज्ञापालन के क्षेत्रों का विवरण दिया गया है।

(अ) (अध्ययन के प्रश्न 7 के सन्दर्भ में।) मुझे प्रतिदिन (प्रश्न सात में दी गई सूची) इन लोगों से अपने सम्बन्ध की जाँच कर लेना आवश्यक है।

(ब) प्रतिदिन परमेश्वर की स्तुति करने के लिए मैं यह तरीका अपनाऊँगा .....

(स) प्रतिदिन परमेश्वर के प्रति अपने समर्पण को नया बनाने का अर्थ है कि मुझे .....

(द) मुझे परमेश्वर पर भरोसा रखने की इसलिए आवश्यकता है कि वह मेरी प्रतिदिन की यह आवश्यकता पूरी करे .....

अब आपने **परमेश्वर की योजना–आपका चुनाव** को पूरी रीति से जान लिया है। यह हमारे लिए अत्यन्त प्रसन्नता का विषय है कि आप हमारे विद्यार्थी हैं और आशा करते हैं कि आप इन्टरनेशनल कॉरेस्पोन्डेन्स इन्स्टीट्यूट द्वारा और भी अधिक पाठ्यक्रमों का अध्ययन करेंगे। आपने जो सीखा है उसे व्यवहार में लाने हेतु परमेश्वर आपकी सहायता करें।

अपने उत्तरों को जांच लें

5 हमें प्रभु को समर्पित पवित्र जीवन जीना चाहिए। (आपका उत्तर भी इसी तरह का होना चाहिए।)

1 (ब) मैं परमेश्वर की योजना को अपने लिए जानना चाहता हूँ ताकि वह कर सकूँ जो वह चाहता है कि मैं करूँ।

6 (अ) नियतकालिक समयों पर।

2 (अ) ग़लत
(ब) सत्य
(स) ग़लत
(द) सत्य

7 आपका उत्तर। क्या कुछ है जिसे आपको क्षमा करना चाहिए। क्या आपको किसी से यह कहना चाहिए कि वह आपको क्षमा करे? यदि किसी से आपके सम्बन्ध टूट या बिगड़ गए तो यह जानने के लिए कि ऐसे में क्या किया जाना चाहिए–प्रभु से सहायता माँगें।

3 (अ) आपका उत्तर। मैं इसलिए ऐसा कहूँगा कि हमें आनंद मिले और वर्तमान परिस्थिति में कैसे प्रत्युत्तर दूँ इसे जान सकूँ।

8 (ब) परमेश्वर की स्तुति और धन्यवाद करना।
(स) अपने आपको परमेश्वर को समर्पित करना।
(द) दूसरों से अपने सम्बन्ध ठीक रखना।
(र) प्रतिदिन की आवश्यकताओं के लिए परमेश्वर पर भरोसा रखना।

4 (ब) हम अक्सर ज़ल्दबाज़ी करते हैं और तुरन्त उठाए जाने वाले कदमों को नज़रअन्दाज़ कर देते हैं।

9 आपका उत्तर। मुझे आशा है कि आपने उन व्यावहारिक तरीकों का वर्णन किया होगा जिनका आप अपने जीवन में सिद्धान्तों के रूप में पालन कर सकते हैं।

अन्तिम दो शब्द

यह एक विशेष प्रकार की पुस्तक है जिसे ऐसे लोगों ने लिखा है जिन्हें आपकी चिन्ता है। ये वास्तव में प्रसन्न लोग हैं, जिन्होंने अनेक प्रश्नों और समस्याओं के सटीक उत्तर अपने जीवन में पाए–जिनका सामना संसार में प्रायः प्रत्येक व्यक्ति किया करता है। ये प्रसन्नचित्त लोग विश्वास करते हैं कि परमेश्वर उनसे चाहता है कि जो उत्तर उन्होंने प्राप्त किए हैं उन्हें दूसरों को बताएँ। ये लोग विश्वास करते हैं कि आपको कुछ ऐसी महत्त्वपूर्ण जानकारी की आवश्यकता है जिससे कि आप भी अपने प्रश्नों और समस्याओं के उत्तर प्राप्त कर लें कि तथा जीवन का ऐसा मार्ग पा जाएँ जो आपके लिए सबसे उत्तम हो।

उन्होंने इस पुस्तक को इस लिए तैयार किया कि आपको यह महत्त्वपूर्ण जानकारी दें। आप इस पुस्तक को निम्नलिखित आधारभूत सत्यों पर आधारित पाएँगे:

1. आपको एक उद्धारकर्त्ता की आवश्यकता है। रोमियों 3:23, यहेजकेल 18:20 पढ़िए।
2. आप स्वयं अपना उद्धार नहीं कर सकते। तीमुथियुस 2:5, यूहन्ना 14:6 पढ़िए।
3. परमेश्वर की इच्छा है कि संसार का उद्धार हो जाए। यूहन्ना 3:16-17.
4. परमेश्वर ने यीशु को भेजा जिसने अपने प्राण दिए ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह उद्धार पाए। ग़लतियों 4:4-5, 1 पतरस 3:18 पढ़िए।
5. बाइबल हमें उद्धार का मार्ग बताती है और सिखाती है कि मसीही जीवन में कैसे बढ़ा जाए। यूहन्ना 15:5, यूहन्ना 10:10, 2 पतरस 3:18 पढ़िए।

6. आप स्वयं अपने अनन्तकाल की नियति (अन्त) का निर्णय करते हैं। लूका 13:1-5, मत्ती 10:32-33, यूहन्ना 3:35-36.

यह पुस्तक आपको अपनी नियति निर्धारण के विषय में बताती है और यह आपको ऐसे अवसर प्रदान करती है कि आप अपने निर्णय को प्रकट कर सकें। यह पुस्तक, अन्य पुस्तकों से भिन्न भी है क्योंकि यह आपके वह अवसर भी प्रदान करती है कि आप उन लोगों से सम्पर्क साध सके जिन्होंने इसे तैयार किया है। यदि आप कोई प्रश्न पूछना चाहते हैं या अपनी आवश्यकता व्यक्त करना चाहते हैं या जो भी आप महसूस करते हैं वह आप उन्हें लिखकर बता सकते हैं।

पुस्तक के अन्तिम पृष्ठ पर निर्णय रिपोर्ट या निवेदन कूपन पाएँगे। जब आप अपने जीवन में निर्णय लेते हैं तो बताए गए अनुसार इस कार्ड को भरकर भेज दीजिए। तब आप अधिक मार्गदर्शन प्राप्त करेंगे। आप इस निवेदन कूपन का प्रयोग प्रश्न पूछने या अपनी प्रार्थना व निवेदन अथवा अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिए भी प्रयोग में ला सकते हैं।

यदि इस पुस्तक के साथ आपको कोई कार्ड या कूपन प्राप्त न हो तो ऐसी स्थिति में अपने आई.सी.आई प्रशिक्षक को लिखें और आपको व्यक्तिगत उत्तर प्राप्त होगा।